मनोविकारों रूपी रावण को जलायें विजयादशमी मनायें

भारत को पुण्य भूमि या परमात्म अवतरण भूमि कहते हैं। साथ ही साथ भारत को अविनाशी खण्ड भी कहते हैं। तो ज़रूर परमात्मा ने श्रेष्ठ कर्म किया होगा तभी हम त्योहार के रूप में मनाते हैं। लेकिन आज अज्ञानता के इस युग में हम उनके ईश्वरीय संदेश को भूल गये हैं और रसम-रिवाज़ के रूप में उसे मनाने लगे हैं। कई लोग तो इनको सामाजिक मनोविनोद का साधन मात्र समझ बैठे हैं। अपनी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से पृथक होकर पाश्चात्य देशों का अनुकरण कर, हम घोर भौतिकता की ओर तेज़ी से बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे समय में आवश्यक है कि त्योहारों के आध्यात्मिक संदेश को हम पूर्ण रूपेण हृद्यंगम करें। वस्तुतः यह त्योहार माया की मादक नींद से बेसुध नर-नारी को झकझोर कर जगाने के लिए आते हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

इन त्योहारों में विजयदशमी अर्थात् असुरत्व पर देवत्व की विजय का प्रतीक है। इसके सम्बंध में कई सारी पौराणिक कहानियां लिखी हुई हैं। कहते हैं कि जब असुरों के अनाचार और अत्याचार से धरा प्रकम्पित हो उठी थी, तब देवत्व का लोप हो गया था और मानवता कराह रही थी, तब शक्ति रूपेण दुर्गा ने उनका विनाश किया और देवत्व की पुनः स्थापना की। इसी दिन देव विजयी रावण पर राम ने विजय प्राप्त की। जिससे देव भूमि, भारत में पावन सतोप्रधान राम राज्य की स्थापना हुई, जिसका गायन करते हम आज थकते नहीं हैं।

विजयदशमी के दिन प्रतिवर्ष भारतवासी रावण का बुत जलाते हैं लेकिन क्या इससे रावण जल जाता है? वास्तव में इन्हें यह भी पता नहीं कि रावण कौन है और उसे कैसे जलाया जा सकता है। अतः रावण का पुतला जलाने से यह स्पष्ट है कि रावण अभी ज़िन्दा है। और उससे हमको घोर क्षति हो रही है। रावण का अर्थ ही है रुलाने वाला। रावण, माया के पंच विकारों का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति प्रवृत्ति परक है। पवित्र प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक चतुर्भुज विष्णु है। विष्णु, श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का संयुक्त रूप है। उसी तरह रावण, विकारी प्रवृत्ति मार्ग का प्रतीक है। पुरुष के पाँच विकार और स्त्री के पाँच विकार ही संयुक्त रूप में रावण के दस शीश हैं। योगबल से इन विकारों को जलाकर ही हम सच्चा दशहरा मना सकते हैं। दशहरा का भी अर्थ है पति-पत्नी के इन दस विकारों का हरण होना। दशहरा अर्थात् दस+हारा।

राम और रावण युद्ध का इतना गायन है क्योंकि यह एक आध्यात्मिक युद्ध है। रंजनकारी राम, रुलाने वाली माया रूपी रावण पर मानवमात्र को विजय दिलाते हैं। रामचरित मानस में भी राम ने युद्ध में रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक रथ की आवश्यकता बतलाई।

आध्यात्मिक युद्ध यानि हमारे अंदर आध्यात्मिक शक्तियों का लोप होता है, जो कि जीवन के लिए बहुत आवश्यक होती है। इनके अभाव में हम दुःखी, अशांत होते हैं। पाँच विकारों ने हमारी आध्यात्मिक शक्तियों को क्षरण किया, जिससे हम अशांत हुए। तो पुनः इन मनोविकारों को जीतने के लिए हमें आध्यात्मिक शक्ति की ज़रूरत पड़ती है। क्षमा, दया, संतोष और ईश्वरीय स्मृति से मनोविकारों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, ना कि स्थूल शस्त्रों से। तुलसीदास ने भी रावण आदि असुरों को विकारों का प्रतीक माना है।

मोहदस मौलि, तद्भ्रात अहंकार, पाकारि जित कात विश्राम हारि।
लोभ अतिकाय मत्सर मोहदर दृष्ट, क्रोध पापिष्ट बिम्बू घात कारि।।

अर्थात् मोह रावण है, अहंकार रूपी उसका भाई कुम्भकरण है और सुख-शांति नष्ट करने वाला काम रूपी मेघनाद है और लोभ रूपी अतिकाय, मत्सर रूपी दृष्ट महोदर और क्रोध रूपी महापापी देवांतक है।

द्वापरयुग से आत्मा रूपी सीता कंचन मृग के आकर्षण में पड़, परमात्मा राम से विमुख होकर माया रूपी रावण के चंगुल में फँस जाती है। कलियुग के अंत तक जब सारी सृष्टि शोक-वाटिका बन जाती है, तब निराकार परमात्मा आकर ज्ञान-योग के अमोघ अस्त्र-शस्त्रों से माया रावण पर विजय दिलाते हैं और पावन सतोप्रधान सतयुगी दैवी साम्राज्य की पुनः स्थापना कराते हैं। इसके लिए परमात्मा शिव, माताओं को निमित्त बनाते हैं और उनके सिर पर ज्ञानामृत का कलष रखते हैं। ज्ञान-योग और अखंड पवित्रता की दिव्य शक्ति से सुसज्जित भारत माता शक्ति अवतारों की हुंकार से विश्व विजयी रावण और उसकी सेना धराशायी हो जाती है और रामराज्य की स्थापना हो जाती है। इसीलिए विजय दशमी के पूर्व नवरात्रि में पवित्र कन्याओं का पूजन होता है। विकारों से तपित मनुष्य आत्माओं को इन्होंने शीतल बनाया था। अतः शीतलता के रूप में भी इनकी पूजा सर्वत्र होती है।

आज तक आप सभी रावण का पुतला जलाने का खेल खेलते आये हैं, आइये इस विजयदशमी के पावन दिवस पर हम दृढ़ प्रतिज्ञा करें कि परमात्मा शिव की शक्ति सेना में सम्मिलित होकर, अपने में विद्यमान मनोविकारों रूपी रावण का समूल नाश करेंगे और माया की छाया में पल रहे मनुष्यों को पूर्ण पवित्रता का ईश्वरीय संदेश सुनाकर, रावण की इस मायानगरी पर परमात्मा राम का विजय ध्वज फहरा देंगे।

त्याग और तपस्या के बल से अपनी अवस्था को मज़बूत बनाना है

त्याग दिल से होता है, योग बुद्धि से होता है। देह सहित देह के सम्बन्ध, स्वभाव, संस्कार को छोड़, इन्हें भूल मिलनसार बनने के लिए ज्ञान चाहिए।

त्याग दिल से होता है, योग बुद्धि से होता है। देह सहित देह के सम्बन्ध, स्वभाव, संस्कार को छोड़, इन्हें भूल मिलनसार बनने के लिए ज्ञान चाहिए। पहले दिल में महसूसता चाहिए तो त्याग हो होता है। दूसरा, तपस्या अर्थात् एक बाबा दूसरा न कोई। किसी ने मुझसे पूछा कि आप बाबा से शक्ति खींचने के लिए क्या करती हो? बाबा से शक्ति खींचने के लिए देही-अभिमानी स्थिति पर अटेन्शन हो। जैसे मैं कहती हूँ त्याग, तपस्या, सेवा परन्तु कोई-कोई में त्याग वृत्ति नहीं है, तपस्वी मूर्त नहीं है, सिर्फ सेवाधारी हैं। सेवा की लगन बहुत है, सेवा, सेवा, सेवा, अगर सेवा के साथ बुद्धियोग बाबा के साथ रखेंगे तो बल मिलेगा। त्याग से वृत्ति और स्वरूप की स्मृति शुद्ध होती जाती है। सेवा में भावना होती है । सेवा में भागदौड़ करेंगे, पर तपस्या में भागदौड़ नहीं है। अन्दर से त्याग वृत्ति है तो तपस्या कर सकते हैं। परन्तु जिसका त्याग पहला है तो उसकी तपस्या अच्छी है, सेवा ऑटोमेटिक है। मैं बाबा को यूज़ नहीं करती हूँ, बाबा मुझे यूज़ करता है। मेरे में शक्ति व इतना मनोबल कहाँ से आता है? तो मैं कहूँगी ओम शांति से। मेरा श्वास नहीं भी चलता होगा, पर ओम शांति कहेंगी तो उमंग-उत्साह, हिम्मत, नेचुरल मदद मिलती है। हमें सारे दिन में ऐसा कोई काम नहीं करना जो किसी के आगे सॉरी कहना पड़े। साड़ी की लाज रखो। अपनी स्थिति को मजबूत बनाना चाहिए क्योंकि समय अनुसार बाबा जैसी स्थिति चाहते हैं वैसी नहीं है। भले ही हम सेवा कितनी भी कर रहे हों, क्लास करा सकते हैं, कोर्स भी करा सकते हैं, परन्तु मेरे में इतनी ताकत नहीं है जो मैं अच्छी तरह से लम्बा बोलूँ, पर काम लायक तो बोलूँ, जो ज़रूरी हो वो बोलूँ, यह मिस नहीं करें।कोई क्लास में लेट आवे वो साकार में बाबा को अच्छा नहीं लगता था। बाकी बाबा का बोलना ऐसा इशारे से होता था तो उसमें बहुत समझानी मिल जाती थी। पुरुषार्थ की लगन हो तो पुरुषार्थ ऑटोमेटिक साथ देता है। सदा पुरुषार्थ की अच्छी-अच्छी बातें इमर्ज होती हैं तो संश्य नहीं आता है। तो हमें भी इन सब बातों को फॉलो कर आगे बढ़ते रहना है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

जब हद के मैं और मेरे-पन की पूंछ को आग लगे तब लंका जले

हम सभी बाबा के लाडले हैं। बाबा तो कहते हैं, यह मेरे सेवा के साथी हैं। और जो सेवा के साथी हैं, वो सदा समीप रहते हैं। आजकल बाबा की बच्चों के प्रति जो भी शुभ आशायें हैं, उन्हें पूरा करने का उमंग हर एक के मन में आता है। इसके लिए हर एक प्लैन भी बनाते हैं, संकल्प भी करते हैं, लेकिन प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में अन्तर हो जाता है। जितना चाहते हैं उतना नहीं होता है। उसका कारण क्या है?

इसके लिए तीन बातें अपने जीवन में नोट करनी चाहिए, तभी हम बाबा की आशा पूरी कर सकते हैं। बाबा जब होमवर्क देते हैं तो थोड़ा टाइम उमंग फुल रहता है, अटेन्शन भी रहता है फिर पीछे कारोबार में जाने से, जब हम एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं तो उसमें चलते-चलते अटेन्शन ढीला हो जाता है। हमने अनुभव किया है - देह अभिमान जो 63 जन्म रहा है, तो जब किसी बात में मेरा नाम आता है तो हम दूसरों को आगे कर देते हैं कि वह भी ऐसे करता है। हम अपनी गलती महसूस करें उसमें परसेन्टेज हो जाती है। इसमें मूल बाबा ने दो शब्द कहे हैं - हद का मैं और मेरा, ये दो शब्द वास्तव में अवस्था को ऊपर-नीचे करते हैं। हनुमान को महावीर भी कहते हैं, फिर पूंछ भी दिखायी है और उसी पूंछ से लंका भी जलाते हैं। मैं और मेरे की पूंछ जब तक नहीं जलायेंगे, तब तक लंका जलेगी नहीं, तो इस मैं और मेरे को अपने प्रति नोट करें। अपने ऊपर अटेन्शन रखें। दूसरा-उमंग-उत्साह नहीं गंवाये। तीसरा-हिम्मत नहीं हारें।

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

हनुमान को महावीर भी कहते हैं, फिर पूंछ भी दिखायी है और उसी पूंछ से लंका भी जलाते हैं। मैं और मेरे की पूंछ जब तक नहीं जलायेंगे, तब तक लंका जलेगी नहीं, तो इस मैं और मेरे को अपने प्रति नोट करें।

अपने चलन और चेहरे द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करने पर बाबा अभी ध्यान खिंचवाता है। हमारे संकल्प में ज़्यादा होता है, वाणी में थोड़ा कम, फिर सम्बन्ध-सम्पर्क और कर्म में आते हैं तो और कम हो जाता है। कई कहते हैं हम तो रहते ही योग में हैं, लेकिन हमारा प्रैक्टिकल रूप भी तो दिखाई दे। दूसरे को भी दिखाई दे, इसमें अलग रहने की बात नहीं है, लेकिन कारोबार में आते हुए अलग रहें, यह बाबा आजकल चाहता है। कम्बाइण्ड सेवा करो। मन्सा की भी करो और आवाज़ की भी करो। बाबा ने कहा भले भाषण करते हो, लेकिन भाषण करने से उनको भासना आ जाये, वो कम होती है। अगर मन्सा शक्ति के अनुभव में रहकर वाणी चला रही हूँ, अगर मैं उस अथॉरिटी के अनुभव में हूँ, तो अनुभव करा सकती हूँ। बाबा ने हमको एक शब्द बोला था कि कभी तुम सेवा करो तो ये नहीं समझो कि मैं स्टेज पर हूँ। मैं स्टेज पर हूँ, पर भाषण कराने वाला बाबा है।

हमने जब पहली बार भाषण किया तो सभी ने कहा ये देवियां आयी हैं। आत्मा की खुशी, आत्मा की शक्ति अनुभव हो।

शिव शक्ति बन दैहिक वृत्ति के संस्कार का अंतिम संस्कार कर दो

हम सब ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण बच्चे संगमयुग पर पवित्रता के अवतार हैं। हमें मन्सा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण पावन बनना और बनाना है। तो हर एक अपने आपसे पूछो कि हमने अपनी वृत्तियों को, विशेष अपनी मन्सा को कहाँ तक पवित्र, शुद्ध बनाया है। अगर अभी तक मेरी प्रकृति में, (कर्मेन्द्रियो में) चंचलता है तो क्यों? जब बाबा इशारा देते बच्चे अन्तर्मुख हो जाओ, फिर भी अन्तर्मुख क्यों नहीं होते? बाबा कहते बच्चे गम्भीर हो जाओ तो भी इशारे को क्यों नहीं समझते? योग में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं? क्यों नहीं शीतल योगी बनते? पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट क्यों नहीं?

इन सब प्रश्नों का जवाब यही है कि हमने पवित्रता की शक्ति को, उसके महत्व को पूरा समझा ही नहीं है। प्युरिटी की शक्ति से दूसरी सब बातें स्वतः समाप्त हो जायेंगी, इसलिए सभी इस पर पूरा-पूरा अटेन्शन दो। बाहरमुखता के कारण ही वृत्ति जाती है। बाहरमुखता में आने से ही संग का रंग लगता है और विकारों के वशीभूत होते हैं।

हम सब रक्षक बाप की रक्षा के नीचे बैठे हैं, इसलिए ख्याल चला कि हर एक अपने अन्दर ऐसी विल पावर क्यों नहीं रखते हैं? क्या आप सभी ऐसी चैलेन्ज कर सकते हो कि हम पक्के पवित्र योगी, सर्व कर्मेन्द्रिय जीत हैं? कोई भी देह की आकर्षण मुझे आकर्षित कर नहीं सकती?

दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

प्युरिटी की शक्ति से दूसरी सब बातें स्वतः समाप्त हो जायेंगी, इसलिए सभी इस पर पूरा-पूरा अटेन्शन दो।

दिखाते हैं कि काली ने अपने पांव नीचे असुरों को दबाया है। यदि थोड़ी भी बुरी दृष्टि वाला है तो उसको असुर कहा जाता है। उसे एकदम पांव नीचे दबाया, उसका नाम है शिव शक्ति। कोई कैसी भी वृत्ति वाला क्यों नहीं आवे, उसकी वृत्तियां सामने आते ही बदल जायें। दुनिया इस बात को मुश्किल समझती और बाबा हमें इसी बात पर विजय प्राप्त कराते हैं। जो बाल ब्रह्मचारी योगी हैं, वह बड़े नाज़ से कहेंगे, ऐसे बाल ब्रह्मचारियों ने यह रिकार्ड तोड़ा है। तो अपने आपसे पूछो कि क्या हमने कम्पलीट मात्रा में इन विकारी वृत्तियों को जीता है? अगर नहीं तो क्यों? हंसी-मजाक भी क्यों?

आप सभी पक्के योगी रहो - यह है दादी का शुभ संकल्प। एक - एक बाबा का बच्चा चमकता हुआ योगी दिखाई दे। तो खुद की सूक्ष्म चेकिंग करो कि हमारी मन्सा, वाचा सूक्ष्म भी कहाँ है? अगर मन्सा वृत्ति भी किसी देहधारी में जाती है तो उस वृत्ति को राख बना दो।

हम शूद्र जन्म से मर गये तो फिर हमारे में वह संस्कार क्यों? अभी हमारा जन्म बदल गया, संस्कार बदल गये तब ब्राह्मण बनें। नहीं तो ब्राह्मण ही नहीं कहो। ब्राह्मण माना शीतल काया वाले योगी। जब काम की वृत्ति पूरी नहीं होती है तो गुस्सा निकलता है। दैहिक वृत्ति जाना माना पाप, तो पुण्य आत्मा कब बनेंगे? जो कम्पलीट विजयी हैं उसे ही पुण्य आत्मा कहा जायेगा। तो क्या यह सम्भव नहीं हो सकता? क्या हम ऐसे पावरफुल बनकर विजयी नहीं हो सकते? तो आज से इस संस्कार का अन्तिम संस्कार कर दो।